खण्ड - अ

प्रश्न : 1. इस प्रश्न में 15 अतिलघुत्तरीय उप-प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न हेतु आदर्श शब्द सीमा 20 शब्द होगी। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 02 (दो) अंकों का है। (2 × 15 = 30)

प्रश्न (1.1) याज्ञवल्क्य

उत्तर: याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषद में वर्णित एक हिंदू वैदिक ऋषि और दार्शनिक थे। वह अपने आध्यात्मिक ज्ञान और शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।

प्रश्न (1.2) इक्ता

उत्तर: इक्ता, दिल्ली सल्तनतकाल में सैनिक सेवाओं के बदले अधिकारियों को दिया जाने वाला एक भू-अनुदान था। इक्तेदार को अपने इक्ता से राजस्व एकत्र करने का अधिकार होता था।

प्रश्न (1.3) पेरिस की संधि

उत्तर: 1763 में पेरिस की संधि पर हस्ताक्षर के साथ यूरोप में सप्त वर्षीय युद्ध (1756-63) समाप्त हो गया। परिणाम स्वरूप, फ्रांसीसियों ने अपने कई भारतीय क्षेत्रों को ब्रिटिशों को सौंप दिया।

प्रश्न (1.4) रामचन्द्र पांडुरंग

उत्तर: रामचंद्र पांडुरंग (तात्या टोपे) 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान और कुशल क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने 1857 के विद्रोह में नाना साहेब पेशवा के सेनापति के रूप में भाग लिया।

प्रश्न (1.5) डोमिंगो पायस

उत्तर: यह पुर्तगाली यात्री था, जिसने कृष्णदेव राय के शासनकाल में 1520 ई. के आसपास विजयनगर की यात्रा की थी। डोमिंगो पायस ने विजयनगर की प्रशंसा करते हुए उसकी तुलना रोम से की है।

प्रश्न (1.6) चौसठ योगिनी मंदिर

उत्तर: यह ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित खजुराहो का सबसे प्राचीन मन्दिर है। सम्पूर्ण मन्दिर परिसर में 65 छोटी कोठरियां बनी हुई हैं।

Chronicle ias

प्रश्न (1.7) राई नृत्य

उत्तर: राई नृत्य एक पारंपरिक और जीवंत लोकनृत्य है, जो मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रचलित है।

प्रश्न (1.8) समाहर्ता

उत्तर: समाहर्ता मौर्य साम्राज्य में राजस्व विभाग का प्रधान अधिकारी था, जो करों के संग्रह की निगरानी करता था। यह एक महत्वपूर्ण कार्यकारी अधिकारी था जो विभिन्न आर्थिक विभागों को नियंत्रित करता था।

प्रश्न (1.9) भोजताल

उत्तर: भोजसर (भोजताल) मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित एक प्रमुख झील है। इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में राजा भोज ने करवाया था।

प्रश्न (1.10) बारदोली सत्याग्रह

उत्तर: बारदोली सत्याग्रह 1928 में गुजरात के बारदोली में किसानों द्वारा ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए करों में वृद्धि के खिलाफ एक किसान आंदोलन था। इस आंदोलन का नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया था।

प्रश्न (1.11) भवभूति

उत्तर: भवभूति 8वीं सदी के भारतीय विद्वान थे, जो संस्कृत में लिखे गए अपने नाटकों और कविताओं के लिए विख्यात थे। कवि भवभूति की कृतियों में महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित शामिल हैं।

प्रश्न (1.12) सांची स्तूप

उत्तर: मध्य प्रदेश में स्थित एक प्राचीन बौद्ध स्मारक है, जो मौर्य सम्राट अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बनाया गया था। सांची स्तूप को 1989 से यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में भी मान्यता प्राप्त है।

प्रश्न (1.13) फतवा-ए-आलमगीरी

उत्तर: औरंगजेब के समय मुस्लिम कानूनों के संग्रह हेतु 'फतवा-ए-आलमगिरी' नामक पुस्तक की रचना हुई थी।

Chronicle ias

प्रश्न (1.14) स्वराज दल

उत्तरः इस दल की स्थापना 1 जनवरी, 1923 को देशबन्धु चित्तरंजन दास तथा मोतीलाल नेहरु ने की थी। इसे "कांग्रेस-खिलाफत स्वराज्य पार्टी" भी कहा गया।

प्रश्न (1.15) मृगेन्द्रनाथ गुफाएं

उत्तरः मृगेन्द्रनाथ गुफाएँ मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित हैं, जो पाटनी गाँव के पास स्थित है। इन गुफाओं में भीमबेटका की गुफाओं के समान शैलचित्र भी पाए गए हैं।

प्रश्न : 2. इस प्रश्न में 10 लघुत्तरीय उप-प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु आदर्श शब्द सीमा 60 शब्द होगी। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 07 (सात) अंकों का है। (7 × 10 =70)

प्रश्नः (2.1) हड़प्पा सभ्यता की लिपि पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तरः हड़प्पा सभ्यता की लिपि के साक्ष्य मुख्यतः मुहरों और मृद्भाण्डों से प्राप्त हुए हैं। यह एक भाव-चित्राक्षर (Pictographic) लिपि थी, जिसे बाउस्ट्रोफेडन शैली में लिखा जाता था। इसमें लगभग 64 मूल चिह्न और 250 से 400 अक्षर पाए गए हैं। सर्वाधिक चिह्नों में मछली की आकृति प्रमुख है। यद्यपि इसे पढ़ने के प्रयास हुए हैं, परंतु यह लिपि अब तक अपठनीय बनी हुई है।

प्रश्नः (2.2) मामलुक राजवंश काल की वास्तुकला की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तरः मामलुक राजवंश काल की वास्तुकला की मुख्य विशेषताएं:

- मामलुक काल की वास्तुकला इस्लाम की शक्ति का प्रतीक थी, जैसे कुतुबमीनार।
- अधिकांश निर्माण हिन्दू कारीगरों द्वारा हुआ, जिससे हिन्दू प्रभाव दिखाई देता है।
- समय और धन की कमी के कारण मंदिरों व पाठशालाओं को मस्जिदों में बदला गया, जैसे कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद।
- इस काल में सुंदर मेहराब और गुम्बदों का अभाव था तथा मीनारों का आधार चौड़ा और ऊपरी भाग पतला होता था।

Chronicle ias

प्रश्नः (2.3) कलचुरी शासक कोक्कल की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

उत्तरः कोक्कल प्रथम त्रिपुरी के कलचुरी वंश का वास्तविक संस्थापक था।

- उसने प्रतिहार शासक मिहिरभोज, गुहिल सामंत श्रीहर्ष और तुरुष्कों को पराजित किया।
- राष्ट्रकूटों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए और चन्देल राजकुमारी नट्टा देवी से विवाह कर सीमाएँ सुरक्षित कीं।
- उसने राष्ट्रकूटों की ओर से वेंगी के चालुक्यों से युद्ध भी किया, यद्यपि उसमें पराजय मिली। उसकी सैन्य नीतियाँ प्रभावशाली थी।

प्रश्नः (2.4) उन कारकों की जाँच कीजिए जिनके कारण भारत में होम रूल आंदोलन का उदय हुआ।

उत्तरः भारत में होम रूल आंदोलन के उदय के कारणः

- प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन की सहायता के बावजूद स्वशासन न मिलने पर कांग्रेस में निराशा।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान कर वृद्धि और महंगाई से जनता असंतुष्ट।
- तिलक की माण्डले जेल से रिहाई और सक्रिय राजनीति में वापसी।
- ऐनी बेसेंट का आयरिश होमरूल लीग से प्रेरित होकर भारत में आंदोलन चलाने का निर्णय।
- जनता में स्वशासन की भावना और जागरूकता में वृद्धि।

प्रश्नः (2.5) आम्हणदास के महत्वपूर्ण योगदानों और उपलब्धियों पर चर्चा करें।

उत्तरः आम्हणदास के महत्वपूर्ण योगदान और उपलब्धियांः

- **राज्य विस्तारः** 52 गढ़ों का साम्राज्य, जो उत्तर में पन्ना से लेकर दक्षिण में चाँदा जिला तक फैला।
- **कूटनीतिः** दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इब्राहिम लोदी के विद्रोही भाई जलाल को पकड़कर सन् 1518 ई. में सुल्तान को सौंप दिया।
- **राजनीतिक संबंधः** गुजरात के बहादुरशाह और बघेल शासक वीरसिंह देव से मधुर संबंध।

Chronicle ias

- **स्थापत्य:** बाजना मठ, संग्राम सागर झील और चौरागढ़ किला जैसे महत्वपूर्ण निर्माण।
- **उपाधियाँ:** 'संग्रामशाह' और 'बावनगढ़ाधिपति' की उपाधियाँ धारण कीं।

प्रश्न: (2.6) बौद्ध काल में गणतंत्रों के पतन के कारणों का उल्लेख करें।

उत्तर: बौद्ध काल में गणतंत्रों के पतन के कारण:

- **बौद्ध कालीन गणराज्य वस्तुत:** कुलीन तंत्र थे, जिनमें जनसामान्य का सहभाग नगण्य था, जिससे युद्ध के समय व्यापक जनसमर्थन नहीं मिल सका।
- हिमालय की तलहटी में स्थित होने के कारण उनका आर्थिक आधार भी दुर्बल था।
- साम्राज्यवादी युग में निर्णय प्रक्रिया की धीमी गति भी इनके पतन का कारण बनी।
- कोशल, मगध और बाद में गुप्तों के विस्तारवादी अभियानों ने अंतत: इन गणराज्यों का पूर्णत: अंत कर दिया।

प्रश्न: (2.7) औरंगजेब की धार्मिक नीति का मूल्यांकन करें।

उत्तर: औरंगजेब की धार्मिक नीति-

- औरंगजेब की धार्मिक नीति कट्टरपंथी थी, जिसका आधार इस्लामी शरीयत था।
- उसने मंदिर तोड़े, जजिया व तीर्थकर लगाया, और हिन्दू उत्सवों पर प्रतिबंध लगाया।
- मुस्लिम हितों को प्राथमिकता दी और धार्मिक सहिष्णुता को कम किया।
- कला-संस्कृति पर अंकुश लगाया गया। उसकी नीति से साम्राज्य में असंतोष बढ़ा, जिसने मुगल सत्ता की नींव को कमजोर किया।

प्रश्नः (2.8) राजपूत काल के दौरान सामाजिक स्थिति का परीक्षण करें।

उत्तरः राजपूत काल में समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था, जिसमें ब्राह्मण और क्षत्रिय सर्वोच्च थे।

- वैश्यों की स्थिति गिर गई थी, जबकि शूद्रों को कृषि का अधिकार मिलने से स्थिति थोड़ी सुधरी।
- जाति प्रथा और अस्पृश्यता प्रचलित थी। पितृसत्तात्मक व्यवस्था प्रभावी थी।
- शासक वर्ग की महिलाएं शिक्षित थीं, पर सामान्य महिलाएं अनेक कुरीतियों से प्रभावित थी। दास प्रथा प्रचलित थी।
- शिक्षा में भेदभाव था। मनोरंजन व भोग-विलास का भी प्रचलन था।

प्रश्नः (2.9) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 का मूल्यांकन करें।

उत्तरः भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 का मूल्यांकनः

सकारात्मक पक्षः

- औपनिवेशिक शासन का अंत और भारत को स्वतंत्रता मिली।
- भारत और पाकिस्तान के रूप में दो स्वतंत्र डोमिनियन बने।
- संविधान निर्माण का अधिकार प्राप्त हुआ और ब्रिटिश हस्तक्षेप समाप्त हुआ।

नकारात्मक पक्षः

- विभाजन की त्रासदी, दंगे, विस्थापन और मानव हानि।
- देसी रियासतों को भारत या पाकिस्तान में विलय के असमंजस से समस्याएँ उत्पन्न हुई।
- अधिनियम में भारतीय जनता की भागीदारी नहीं थी।

प्रश्नः (2.10) शाहजहाँ बेगम के शासनकाल के दौरान महत्वपूर्ण योगदानों और प्रमुख उपलब्धियों पर चर्चा करें।

उत्तरः शाहजहाँ बेगम के शासनकाल के महत्वपूर्ण योगदान और प्रमुख उपलब्धियाँ:

- राज्य को 4 जिलों में विभाजित किया और भू-राजस्व सुधार किया।
- भोपाल का मानचित्र तैयार करवाया।
- भोपाल की पहली जनगणना करवाई।
- भोपाल-इटारसी रेलवे लाइन का निर्माण (1884)।
- महिलाओं के लिए लेडी-लैंसडाउन और पुरुषों के लिए प्रिंस ऑफ वेल्स अस्पताल की स्थापना।
- ताज-उल-मस्जिद का निर्माण।
- भोपाल रियासत का पहला डाक टिकट जारी किया।
- विक्टोरिया, सुलेमानिया, मदरसा-ए-बिलकिसिया स्कूलों की स्थापना।

प्रश्नः 3 इस प्रश्न में 05 दीर्घ उत्तरीय उप-प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु आदर्श शब्द सीमा 200 शब्द है। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 10 (दस) अंकों का है। (10 × 5=50)

प्रश्नः (3.1) वैदिक कालीन सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं का परीक्षण करें।

उत्तरः वैदिक काल का सामाजिक जीवन सरल और सामूहिक था, जो मुख्यतः ऋग्वेद पर आधारित था।

- **वर्ण व्यवस्थाः** इस समाज में वर्ण व्यवस्था महत्वपूर्ण थी, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों में बाँटी गई थी। हालांकि यह व्यवस्था कर्म आधारित थी, जन्म आधारित नहीं। इस काल में जाति-प्रथा और अस्पृश्यता का प्रचलन नहीं था, और समाज समानता पर आधारित था।

- **परिवारः** संयुक्त परिवार की अवधारणा प्रचलित थी, जिसमें नाना, दादा, नाती और पोते एक साथ रहते थे। यह समाज पितृ-सत्तात्मक था, जहां पुरुष परिवार का प्रमुख होता था।

Chronicle ias

- **स्त्रियों की स्थिति:** स्त्रियों की स्थिति उस समय भले ही पुरुषप्रधान थी, लेकिन उन्हें सभा, समिति एवं विदथ में भाग लेने का अधिकार था। वे शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से भी संपन्न थीं। इस काल में कुछ विदुषी स्त्रियों, जैसे- लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी, विश्ववारा, कांक्षावृत्ति आदि ने ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं की रचना भी की थी।

- **दास प्रथा:** दास प्रथा का प्रचलन था, लेकिन दासों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। वे घरेलू कार्यों में संलग्न रहते थे और कृषि कार्यों से बाहर थे।

- **शिक्षा:** शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी, और गुरु के आश्रमों में ही शिक्षा प्राप्त की जाती थी।

- **भोजन:** खान-पान में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन का सेवन किया जाता था, लेकिन गाय के मांस का सेवन निषिद्ध था।

समग्र रूप से, वैदिक काल का समाज सरल, सामूहिक और कर्म पर आधारित था, जिसमें समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया जाता था।

अथवा

प्रश्न: (3.1) राजा भोज के शासनकाल की प्रमुख सांस्कृतिक उपलब्धियों की चर्चा करें।

उत्तर: राजा भोज का शासनकाल मालवा क्षेत्र के सांस्कृतिक उत्थान का स्वर्ण युग माना जाता है। वे स्वयं एक महान कवि, दार्शनिक तथा ज्योतिषी थे। उदयपुर प्रशस्ति में उन्हें "कविराज" कहा गया है। उनकी पत्नी लीलावती भी एक विदुषी थी।

- भोज के दरबार में 500 विद्वानों का निवास था, जिनमें भास्कर भट्ट, दामोदर मिश्र, धनपाल, कालिदास आदि प्रमुख थे।

    - उन्होंने लगभग 34 ग्रंथों की रचना की थी, जिनमें सरस्वतीकण्ठाभरण, युक्तिकल्पतरु, समरांगणसूत्रधार, आयुर्वेदसर्वस्व, गीतप्रकाश, राजमार्तण्ड आदि प्रमुख हैं। इन ग्रंथों में व्याकरण, अलंकार, वास्तु, राजनीति, संगीत, चिकित्सा और दर्शन जैसे विविध विषयों का समावेश है।

- भोज ने वास्तुकला के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने भोपाल के पास भोजपुर में शिव मंदिर और भोजताल (भोजसर झील) का निर्माण करवाया।

Chahal Academy ias

- धार में भोजशाला (सरस्वतीकण्ठाभरण मंदिर), चित्तौड़ में त्रिभुवन नारायण मंदिर तथा कश्मीर में कपालेश्वर मंदिर उनके द्वारा निर्मित प्रमुख मंदिर हैं। उन्होंने कई गढ़ियाँ, कुएँ, बावड़ियाँ तथा धार में विजय स्तंभ का निर्माण भी करवाया।

- फरिश्ता के अनुसार, भोज वर्ष में दो बार सामूहिक भोज का आयोजन करते थे और उन्होंने सरस्वती जन्मोत्सव की परंपरा भी आरंभ की थी।

इन उपलब्धियों से स्पष्ट होता है कि भोज का काल एक समृद्ध सांस्कृतिक युग था।

प्रश्नः (3.2) भारत में बौद्ध धर्म के पतन में योगदान देने वाले कारकों का आलोचनात्मक परीक्षण करें।

उत्तरः भारत में बौद्ध धर्म का उदय सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक ज्ञान की भावना से हुआ था, परंतु 7वीं शताब्दी के पश्चात् इसके पतन की प्रक्रिया आरंभ हो गई।

- इसका प्रमुख कारण बौद्ध संघों में आंतरिक विभाजन था, जो कनिष्क के समय हीनयान और महायान सम्प्रदायों में विभाजित हो गए थे। इन सम्प्रदायों में परस्पर मतभेद और संघर्ष ने धर्म की एकता को कमजोर किया।

- दूसरा कारण ब्राह्मणवादी परंपराओं के साथ समझौता था। महायान सम्प्रदाय ने मूर्ति पूजा और कर्मकाण्डों को अपनाकर बौद्ध धर्म की मौलिक सादगी और तार्किकता को नष्ट कर दिया। महिलाओं के प्रवेश और इससे उत्पन्न चारित्रिक शिथिलता ने भी बौद्ध संघ की प्रतिष्ठा को प्रभावित किया।

- वज्रयान सम्प्रदाय में तांत्रिक साधनाओं और मांस, मदिरा व स्त्रियों के उपभोग जैसी विकृतियों ने बौद्ध धर्म की छवि को और अधिक नुकसान पहुँचाया।

- इसके अलावा, बौद्ध धर्म में सुधारकों का अभाव तथा हिन्दू धर्म में शंकराचार्य जैसे सुधारकों का उदय, जिन्होंने बौद्ध विचारों को समाहित कर लिया, बौद्ध धर्म के पतन के निर्णायक कारण बने।

अंततः तुर्क आक्रमणों ने बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया और भिक्षुओं की हत्या कर दी, जिससे यह धर्म भारत में लगभग विलुप्त हो गया। इन सभी कारकों ने मिलकर बौद्ध धर्म के पतन को सुनिश्चित किया।

अथवा

प्रश्नः (3.2) भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू की गई भू-राजस्व की महालवाड़ी प्रणाली की विशेषताओं और प्रभाव का परीक्षण करें।

उत्तरः महालवाड़ी प्रणाली ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन द्वारा लागू की गई एक प्रमुख भू-राजस्व व्यवस्था थी।

- महालवाड़ी प्रणाली 1822 में होल्ट मैकेंजी द्वारा शुरू की गई थी और 1833 में लॉर्ड विलियम बेंटिक के अधीन इसकी समीक्षा की गई थी।
- यह प्रणाली उत्तर-पश्चिमी सीमांत, आगरा, मध्य प्रांत, गंगा घाटी, पंजाब आदि में शुरू की गई थी।
- इसमें जमींदारी और रैयतवारी दोनों प्रणालियों के तत्व शामिल थे।
- इस व्यवस्था के तहत भूमि को महलों में विभाजित किया जाता था। कभी-कभी एक महल में एक या एक से अधिक गांव शामिल होते थे।
- कर महाल पर लगाया गया था। प्रत्येक किसान ने अपना हिस्सा दिया। मालिकाना हक किसानों के पास था।
- राजस्व का संग्रह गांव के मुखिया या गांव के नेताओं द्वारा किया जाता था।
- इसने विभिन्न मृदा वर्गों के लिए औसत किराये की अवधारणा प्रस्तुत की।
- राजस्व में राज्य का हिस्सा किराये के मूल्य का 66% था। यह समझौता 30 वर्षों के लिए तय किया गया था।
- गांव का मुखिया लम्बरदार कहलाता था और वही सरकार को कर चुकाने हेतु उत्तरदायी होता था। यदि कोई किसान कर नहीं चुका पाता, तो भूमि उससे छीनकर बड़े कृषक को दे दी जाती थी। इस प्रकार भूमि क्रय-विक्रय और गिरवी रखी जा सकने योग्य संपत्ति बन गई।
- इस प्रणाली ने किसानों के शोषण को बढ़ावा दिया। छोटे किसान राजस्व न चुका पाने के कारण अपनी भूमि से वंचित हो गए और सम्पन्न कृषक लम्बरदार के माध्यम से जमींदार जैसे प्रभावशाली बन गए।

Chronicle ias

निष्कर्षत, महालवाड़ी व्यवस्था ने राजस्व संग्रह में अंग्रेजों को सुविधा तो दी, परंतु इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में असमानता और किसान वर्ग का शोषण बढ़ा।

प्रश्नः (3.3) भारतीय समाज, संस्कृति और धर्म पर भक्ति आंदोलन के प्रभाव पर चर्चा करें।

उत्तरः भक्ति आंदोलन ने मध्यकालीन भारत में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में गहरा प्रभाव डाला। इस आंदोलन ने समाज में व्याप्त जात-पात, छुआछूत और संकीर्ण भावनाओं का विरोध किया और मानव समानता का संदेश दिया। संत कबीर, रविदास और नामदेव जैसे संतों ने जाति-आधारित भेदभाव को सिरे से नकारा।

- धार्मिक क्षेत्र में भक्ति आंदोलन ने कर्मकाण्ड, मूर्ति पूजा, बहुदेववाद और अंधविश्वासों का विरोध किया। संतों ने सरल और सहज उपासना पद्धति को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने आत्मा और परमात्मा का सीधा संबंध स्थापित करने की बात कही, जिससे धार्मिक एकता को बल मिला।

- सांस्कृतिक प्रभाव की दृष्टि से यह आंदोलन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। मीरा, कबीर, सूरदास, गुरु नानक आदि संतों ने क्षेत्रीय भाषाओं में भक्ति साहित्य की रचना की, जिससे इन भाषाओं का विकास हुआ। साथ ही भक्ति संगीत और कीर्तन परंपरा को भी लोकप्रियता मिली।

- राजनीतिक रूप से, इस आंदोलन ने सिख और मराठा समुदायों में एकता और आत्मबल को प्रोत्साहित किया, जिससे उनके सशक्त राज्य स्थापित हुए। आर्थिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता और श्रम की महत्ता को बढ़ावा मिला।

- कुल मिलाकर, भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज को मानवतावाद, उदारता, सहिष्णुता और सांस्कृतिक समरसता की ओर अग्रसर किया।

अथवा

प्रश्नः (3.3) भारत छोड़ो आन्दोलन के कारणों का वर्णन कीजिये।

उत्तरः भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 ई. में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक व्यापक और निर्णायक जनांदोलन था। इसके अनेक कारण थे, जो राजनीतिक, आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से जुड़े हुए थे।

- प्रथम कारण था कि द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ (1 सितम्बर, 1939) पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं की सहमति के बिना ही भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित कर दिया, जिससे असंतोष फैल गया। इसके विरोध में कांग्रेस के मंत्रिमंडलों ने 30 अक्टूबर, 1939 को इस्तीफा दे दिया, जिससे जनभावनाएं और अधिक आक्रोशित हो गई।
- दूसरा प्रमुख कारण क्रिप्स मिशन (मार्च 1942) की असफलता थी। इस मिशन के असफल होने से यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार भारत को स्वतंत्रता देने के पक्ष में नहीं है। इससे निराश भारतीय नेताओं ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर करने का निर्णय लिया।
- तीसरा कारण था युद्धजनित आर्थिक संकट, जिससे जनता में भूख, महंगाई और बेरोजगारी जैसी समस्याएं बढ़ गई थीं।
- इसके अतिरिक्त, जापान द्वारा ब्रिटेन की हार और जापानी आक्रमण की आशंका ने भी भारतीयों को अंग्रेजों से मुक्ति की आवश्यकता का एहसास कराया।
- इन सभी कारणों के परिणामस्वरूप भारत छोड़ो आन्दोलन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन आक्रोश की परिणति बना, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम निर्णायक संघर्ष सिद्ध हुआ।

प्रश्नः (3.4) गांधार और मथुरा मूर्तिकला शैलियों की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा करें और उनकी विशिष्ट विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

उत्तरः मौर्योत्तर काल में भारतीय मूर्तिकला का उत्कर्ष गांधार और मथुरा शैलियों के रूप में हुआ, जिनमें कला की विभिन्न प्रवृत्तियां परिलक्षित होती हैं।

Chronicle ias

- **गांधार शैली का विकास मुख्यतः** गांधार (वर्तमान पाकिस्तान) क्षेत्र में हुआ। इसे इण्डो-ग्रीक या ग्रीक-बुद्धिस्ट शैली भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसमें बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों का निर्माण किया गया, जिनमें ग्रीक देवता अपोलो जैसी विशेषताएं देखी जा सकती हैं।

- **मूर्तियाँ मुख्यतः** काले, नीले और हरे स्लेटी पत्थर से बनाई जाती थीं। यह शैली यथार्थवादी थी, जिसमें भौतिकता और अलंकरण की अधिकता रही, किन्तु आध्यात्मिकता का अभाव स्पष्ट दिखता है।

- इसके विपरीत, मथुरा शैली का विकास मथुरा में हुआ और यह भारतीय मूल की विशुद्ध शैली थी। इसमें बौद्ध, हिन्दू और जैन धर्मों से संबंधित मूर्तियों का निर्माण हुआ। इस शैली की मूर्तियाँ लाल बलुआ पत्थर से निर्मित होती थीं।

- मथुरा शैली आदर्शवाद पर आधारित थी, जिसमें मूर्तियों में आध्यात्मिक भावनाओं की गहनता थी और भौतिक आडंबर न्यूनतम था। इसके साथ ही, यह शैली लोक जीवन एवं प्राकृतिक विषयों को भी अभिव्यक्त करती थी।

अतः दोनों शैलियाँ अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण भारतीय मूर्तिकला में अद्वितीय स्थान रखती हैं।

अथवा

प्रश्नः (3.4) मध्य प्रदेश के पारंपरिक शिल्प का विस्तृत विवरण प्रदान करें।

उत्तरः मध्य प्रदेश की पारंपरिक शिल्पकला इसकी सांस्कृतिक विरासत और जनजातीय जीवनशैली की गहराई को दर्शाती है। यहाँ की शिल्पकला विविधता से परिपूर्ण है और इसमें क्षेत्रीय परंपराओं की झलक मिलती है।

- मिट्टी शिल्प सबसे प्राचीन शिल्पकला है, जिसमें धार, शहडोल, मण्डला आदि क्षेत्रों के शिल्पकार सुंदर मूर्तियां बनाते हैं। मण्डला की पूनिया और अरहरिया जनजातियां टेराकोटा शिल्प में निपुण हैं।

- काष्ठ शिल्प में आदिवासी कलाकार मुखौटे, दरवाजे, दिवाण्या आदि बनाते हैं। कोरकू जनजाति के मृतक स्तंभ "मांडा" प्रसिद्ध हैं।

Chronicle ias

- धातु शिल्प में टीकमगढ़, बैतूल और नरसिंहपुर के शिल्पकार देवी-देवताओं की सुंदर प्रतिमाएं बनाते हैं।
- बाँस शिल्प में बालाघाट, मण्डला व झाबुआ की जनजातियां कलात्मक वस्तुएं बनाती हैं।
- **छीपा शिल्पः** धार के कुक्षी क्षेत्र में कपड़ों पर वनस्पति रंगों से छपाई की जाती है।
- कंघी शिल्प (कांगसी) रतलाम, नीमच और उज्जैन में बंजारा जनजाति द्वारा किया जाता है।
- प्रस्तर शिल्प में संगमरमर की मूर्तियां जबलपुर और ग्वालियर में बनती हैं।
- हस्त शिल्प में दरी, कालीन, जूट के उत्पाद जबलपुर, इंदौर आदि में बनाए जाते हैं।
- **गुड़िया शिल्पः** झाबुआ की भीली गुड़ियाएं बहुत प्रसिद्ध हैं।
- चंदेरी व महेश्वरी साड़ियाँ, बाघ प्रिंट, खिलौना शिल्प, सुपारी व चर्म शिल्प राज्य की विशिष्ट पहचान हैं।

इन शिल्पकलाओं से न केवल राज्य की सांस्कृतिक पहचान बनी हुई है, बल्कि यह ग्रामीण आजीविका का भी आधार है।

प्रश्नः (3.5) उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तरः विक्रमादित्य उज्जैन के प्रसिद्ध शासक थे, जिनका शासन काल राजनीतिक शक्ति, सांस्कृतिक समृद्धि और धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रसिद्ध था। उन्हें शकारि (शकों का संहारक), साहसांक, मालव-महेन्द्र आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया।

- राजनीतिक दृष्टि से उन्होंने 57 ई. पू. में उज्जैन पर शकों के अधिकार को समाप्त कर पुनः मालव गणराज्य की स्थापना की। इस विजय की स्मृति में विक्रम संवत् का प्रारंभ किया गया, जो भारतीय पंचांग प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया।
- उन्होंने सौराष्ट्र, सिन्ध, उत्तर भारत, पूर्वी भारत, दक्षिण भारत, सिंहल और पश्चिमोत्तर भारत तक अपने विजय अभियान चलाए और शकों, यवनों, हूणों, पलवों जैसे मलेच्छों को पराजित किया।

- सांस्कृतिक दृष्टि से विक्रमादित्य का दरबार विद्वानों और कलाकारों का केन्द्र रहा। उनकी सभा में नौ रत्नख्कालिदास, वराहमिहिर, अमरसिंह, धन्वन्तरि, क्षपणक, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर और वररुचि जैसे विद्वान शामिल थे।

- विक्रमादित्य स्वयं संगीत प्रेमी और दीपक राग के कुशल गायक थे।

यद्यपि वे शैव धर्म के अनुयायी थे, फिर भी उन्होंने जैन एवं बौद्ध धर्मों को संरक्षण प्रदान किया, जिससे उनकी धार्मिक सहिष्णुता स्पष्ट होती है। उनके शासन काल को प्रजा के लिए समृद्ध, सुरक्षित और सांस्कृतिक रूप से स्वर्णयुग माना गया।

अथवा

प्रश्नः (3.5) असहयोग आंदोलन का प्रभाव मध्य प्रदेश के किन क्षेत्रों में सबसे अधिक देखा गया?

उत्तरः असहयोग आंदोलन का प्रभाव मध्य प्रदेश के कई क्षेत्रों में व्यापक रूप से देखा गया। 1920 में जब महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया, तो मध्य प्रदेश की जनता ने इसमें सक्रिय भागीदारी निभाई।

- इस आंदोलन का प्रभाव सबसे अधिक छिंदवाड़ा, बालाघाट, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा, कटनी, और सिवनी क्षेत्रों में देखा गया।

- छिंदवाड़ा में गांधीजी स्वयं 1921 में आए और उनके भाषण से प्रभावित होकर महिलाओं ने आभूषण दान दिए और वकीलों ने वकालत छोड़ दी।

- बालाघाट में जमनालाल बजाज, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे नेताओं ने जनता को प्रेरित किया।

- जबलपुर में छात्रों ने शासकीय संस्थाएं छोड़ दीं और राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना हुई। वहीं का झंडा सत्याग्रह इतिहास में प्रसिद्ध है, जिसमें टाउन हाल पर तिरंगा फहराया गया।

- नरसिंहपुर में कांग्रेस शाखा की स्थापना हुई और असहयोग आंदोलन की नीतियों को अपनाया गया। होशंगाबाद और हरदा में भी स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार हुआ। हरदा के युवा जबलपुर के आश्रमों में शामिल होकर आंदोलन का हिस्सा बने।

इसके अतिरिक्त, नागपुर कांग्रेस अधिवेशन (1920) के निर्णयों ने मध्य प्रदेश में आंदोलन को दिशा दी। झंडा सत्याग्रह में जबलपुर और नागपुर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, जिसने आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान दिलाई। इस प्रकार, असहयोग आंदोलन ने मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम की नींव को मजबूत किया।

Chronicle ias